

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 19: पुंसवन व्रत

3 October 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



एक समर्पित पत्नी, स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण किए, भगवान् विष्णु की देवी लक्ष्मी सहित आराधना करती है — वह पवित्र पुंसवन व्रत जिससे परम भगवान् प्रेमपूर्वक प्रसन्न किए जाते हैं और एक गृह पर प्रत्येक कल्याण उतारा जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का उन्नीसवाँ और अन्तिम अध्याय, राजा परीक्षित के अनुरोध पर, पुंसवन व्रत की विस्तृत विधि प्रस्तुत करता है — वही आचरण जिसने दिति का हृदय बदल दिया। यह गृह-भक्ति की एक कोमल मार्गदर्शिका है, पूर्णतः भगवान् विष्णु की देवी लक्ष्मी सहित आराधना पर केन्द्रित, जो इस

स्कन्ध को प्रेमपूर्ण, व्यावहारिक भक्ति के स्वर पर समाप्त करती है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 19 (एकोनविंश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: पुंसवन व्रत
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: भक्त का गृह-मन्दिर
- केन्द्रीय विषय: भगवान् विष्णु तथा देवी लक्ष्मी को समर्पित पवित्र पुंसवन व्रत की विधि तथा फल
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 19, श्लोक 1-28
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

व्रत का आरम्भ

राजा परीक्षित पुंसवन व्रत की विधि जानना चाहते थे, जिससे भगवान् विष्णु इतनी सहजता से प्रसन्न होते हैं। श्रीशुकदेव ने बताया कि पत्नी को यह व्रत — जो प्रत्येक इच्छा पूर्ण करता है — मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से, अपने पति की अनुमति से आरम्भ करना चाहिए। मरुतों के जन्म की कथा सुनकर और ब्राह्मणों से परामर्श कर, उसे स्वयं को शुद्ध करना, स्नान करना, श्वेत वस्त्रों की जोड़ी पहनना, आभूषण धारण करना, और भोजन से पहले देवी श्री सहित भगवान् की पूजा करके यह समर्पण-प्रार्थना अर्पित करनी चाहिए (श्लोक 1-4)।

अलं ते निरपेक्षाय पूर्णकाम नमोऽस्तु ते ।

महाविभूतिपतये नमः सकलसिद्धये ॥ ४ ॥

alaṁ te nirapekṣāya pūrṇa-kāma namo 'stu te mahāvibhūti-pataye namaḥ sakala-siddhaye

अर्थ: हे पूर्णकाम भगवन्, जिन्हें किसी की अपेक्षा नहीं, आपके पास जो कुछ है वही आपके लिए पर्याप्त है; महालक्ष्मी के स्वामी, समस्त सिद्धियों के धाम, आपको नमस्कार है। (स्कन्ध 6, अध्याय 19, श्लोक 4)



स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण किए, समर्पित पत्नी पुंसवन व्रत आरम्भ करती है, देवी श्री सहित भगवान् विष्णु की आराधना कर एक समर्पण-प्रार्थना अर्पित करती है (श्लोक 2-6)।

उसे उनकी आगे स्तुति करनी चाहिए — करुणा, सौभाग्य, महिमा, ऐश्वर्य और प्रत्येक उत्कृष्टता से परिपूर्ण सर्वशक्तिमान् शासक के रूप में — और विष्णु की दिव्य पत्नी, विश्व की माता से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उस पर प्रसन्न हों (श्लोक 5-6)।

नित्य पूजा तथा स्तुति

पवित्र पाठ दोहराते हुए, उपासक को प्रतिदिन भगवान् को प्रेमपूर्ण सेवा का पूरा क्रम अर्पित करना चाहिए — आवाहन, चरण तथा स्नान हेतु जल, वस्त्र तथा यज्ञोपवीत, आभूषण, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप और भोग। अर्पित भोग में से बारह आहुतियाँ पवित्र अग्नि में दी जाती हैं। फिर, भक्ति से विनम्र मन लिए साष्टांग गिरकर, वह पवित्र पाठ दस बार दोहराती है और भगवान् तथा उनकी पत्नी की एक स्तुति का उच्चारण करती है (श्लोक 7-10)।

युवां तु विश्वस्य विभू जगतः कारणं परम् ।

इयं हि प्रकृतिः सूक्ष्मा मायाशक्तिर्दुरत्यया ॥ ११ ॥

yuvāṁ tu viśvasya vibhū jagataḥ kāraṇaṁ param iyaṁ hi prakṛtiḥ sūkṣmā māyā-śaktir duratyayā

अर्थ: आप दोनों विश्व के सर्वव्यापी शासक तथा जगत् के परम कारण हैं; और यह सूक्ष्म प्रकृति, वह माया-शक्ति है जिसे पार करना अत्यन्त कठिन है। (स्कन्ध 6, अध्याय 19, श्लोक 11)



पवित्र पाठ दोहराते हुए, उपासक पवित्र अग्नि में बारह आहुतियाँ देती है और भगवान् तथा उनकी पत्नी की स्तुति का उच्चारण करती है (श्लोक 7-14)।

स्तुति में उपासक भगवान् की आराधना उस परमपुरुष के रूप में करती है जो समस्त यज्ञों के स्वरूप तथा उनके फल के भोक्ता हैं, और देवी लक्ष्मी की श्रद्धा, क्रिया तथा लोकों की प्रकट महिमा के रूप में; भगवान् काल-पुरुष तथा विराट् पुरुष के रूप में, देवी सृष्टि के नाम-रूपों के रूप में जिन्हें वे प्रकाशित और धारण करते हैं। अपने भक्तों पर वर बरसाने वाले परम शासकों के रूप में, उपासक प्रार्थना करती है, मेरी उच्च अभिलाषाएँ सत्य हों (श्लोक 12-14)।

गृह में साझा भक्ति

भगवान् तथा श्री की स्तुति करके, वह भोग हटाती है, जल तथा ताम्बूल अर्पित करती है, और उनकी पुनः पूजा करती है। अध्याय तब पति को भी भक्ति में सम्मिलित करता है: पत्नी को अपने पति की परम आदर से सेवा करनी चाहिए, उसे भगवान् ही मानते हुए, जबकि प्रेमी पति उसके समस्त कर्तव्यों में, ऊँचे-नीचे समान रूप से, सहायता करे। विवाहित दम्पति में से एक भी जो करता है वह दोनों का कल्याण करता है, और यदि पत्नी असमर्थ हो, तो पति को एकाग्र मन से पूजा करनी चाहिए। व्रत कभी भंग न किया जाए, और प्रतिदिन ब्राह्मणों तथा सधवा स्त्रियों का भी सम्मान किया जाए (श्लोक 15-20)।



व्रत गृह में साझा किया जाता है: पत्नी अपने पति को भगवान् मानकर सम्मान देती है, और प्रेमी पति उसके समस्त पवित्र कर्तव्यों में सहायता करता है (श्लोक 17-24)।

ऐसी आराधना के एक पूरे वर्ष के पश्चात्, पतिव्रता पत्नी कार्तिक की अन्तिम तिथि को उपवास करती है; अगले दिन पूर्ववत् भगवान् की पूजा होती है, और पति घी में पके दूध-भात की बारह आहुतियाँ पवित्र अग्नि में देता है। प्रसन्न ब्राह्मणों का आशीर्वाद नतमस्तक होकर ग्रहण करके, दम्पति अपने गुरु तथा अतिथियों को पहले भोजन कराकर अपने स्वजनों सहित भोजन करते हैं (श्लोक 21-24)।

व्रत के फल

श्रीशुकदेव ने तब इस आचरण के प्रचुर आशीर्वादों का वर्णन किया — इसे निभाने वाले गृहस्थ के लिए भरपूर सांसारिक कल्याण, और समर्पित पत्नी के लिए हर प्रकार का सौभाग्य (श्लोक 25)।

एतच्चरित्वा विधिवद्व्रतं विभो
रभीप्सितार्थं लभते पुमानिह ।
स्त्री चैतदास्थाय लभेत सौभागं
श्रियं प्रजां जीवपतिं यशो गृहम् ॥ २५ ॥

*etac caritvā vidhivad vrataṁ vibhor abhīpsitārthaṁ labhate pumān iha strī caītaḍ āsthāya
labheta saubhagaṁ śriyaṁ prajāṁ jīva-patiṁ yaśo gṛham*

अर्थ: जो पुरुष भगवान् के इस व्रत को विधिपूर्वक करता है वह इसी जीवन में अपना अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करता है; और जो स्त्री इसे करती है वह सौभाग्य, समृद्धि, सन्तान, दीर्घायु पति, यश तथा एक सुखी गृह पाती है। (स्कन्ध 6, अध्याय 19, श्लोक 25)



भक्त पर प्रसन्न होकर, भगवान् श्रीहरि तथा देवी श्री प्रत्येक आशीर्वाद प्रदान करते हैं — सन्तान, सौभाग्य, दीर्घायु तथा मुक्ति (श्लोक 25-28)।

एक अविवाहिता कन्या, श्रीशुकदेव ने कहा, एक योग्य पति पाती है; एक विधवा समस्त पापों से मुक्त होकर परम कल्याण प्राप्त करती है; एक निःसन्तान स्त्री दीर्घजीवी सन्तान पाती है; अभागे सौभाग्य पाते हैं, कुरूप सुन्दरता, और रोगी स्वास्थ्य को लौट आते हैं। जो भी इस आख्यान का पाठ मंगल अवसरों पर करता है वह दिवंगत पितरों तथा अधिष्ठाता देवताओं को प्रसन्न करता है; और, भक्त पर प्रसन्न होकर, अग्निदेव, देवी श्री तथा स्वयं भगवान् श्रीहरि उस पर यज्ञ के अन्त में प्रत्येक अभीष्ट कल्याण प्रदान करते हैं (श्लोक 26-28)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की आराधना उनके अभाव के कारण नहीं, अपितु प्रेम से की जाती है। व्रत की आरम्भिक प्रार्थना घोषित करती है कि आत्म-तृप्त भगवान् को हमसे कुछ नहीं चाहिए — हमारी पूजा हृदय का अर्पण है (श्लोक 4)।
2. भगवान् तथा उनकी शक्ति ही सबके कारण हैं। स्तुति विष्णु तथा लक्ष्मी की आराधना विश्व के परम कारण के रूप में करती है, वे पुरुष तथा भोक्ता, वे मूल प्रकृति (श्लोक 11)।
3. भक्ति का स्थान गृह में है। पुंसवन व्रत भगवान् की आराधना को नित्य गृहस्थ-जीवन में बुनता है, जिसे पति और पत्नी साथ मिलकर करते हैं (श्लोक 17-18)।
4. साझा किया गया भक्ति-कर्म दोनों को आशीर्वाद देता है। दम्पति में से एक जो भक्ति से करता है वह दोनों का कल्याण करता है, जिससे कोई पूजा के फल से वंचित नहीं रहता (श्लोक 18)।
5. सच्ची आराधना प्रचुर फल देती है। व्रत गृहस्थ को सांसारिक कल्याण और विरक्त को आध्यात्मिक मुक्ति देता है, क्योंकि भगवान् प्रत्येक उस हृदय को पुरस्कृत करते हैं जो उनकी ओर मुड़ता है (श्लोक 25-28)।

एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

यह उचित ही है कि षष्ठ स्कन्ध, अपने समस्त तूफानों के पश्चात् — इन्द्र का पाप और शोक, वृत्र का आतंक और महिमा, चित्रकेतु का शोक और जागरण — किसी युद्ध या दर्शन से नहीं, अपितु भगवान् के सम्मुख एक दीप जलाते हुए एक शान्त गृह से समाप्त हो। पुंसवन व्रत इस स्कन्ध के विराट् सत्यों को एक साधारण गृह के माप तक ले आता है, जहाँ पति और पत्नी साथ पूजा करते हैं, सन्तों का सम्मान करते हैं, और अपने दिन विष्णु तथा लक्ष्मी को अर्पित करते हैं। और ध्यान दीजिए कि व्रत के पहले ही शब्द स्वर निर्धारित कर देते हैं: भगवान् को हमसे कुछ नहीं चाहिए। वे पूर्ण हैं, आत्म-तृप्त, किसी उत्कृष्टता से रहित नहीं — इसलिए हमारी पूजा कभी एक लेन-देन नहीं हो सकती जिसमें हम किसी अभावग्रस्त देवता को भरते हों। वह केवल प्रेम हो सकती है, स्वतन्त्रतापूर्वक अर्पित, अपने ही लिए। इसीलिए व्रत उसे निभाने वाले को इतना समृद्ध आशीर्वाद देता है: इसलिए नहीं कि भगवान् को रिझाया जाता है, अपितु इसलिए कि जो हृदय बिना सौदे के देना सीख लेता है वह पहले से ही रूपान्तरित हो रहा होता है। जो स्कन्ध पतित अजामिल के उद्धार से आरम्भ हुआ, वह उसी उद्धारक भक्ति को प्रत्येक गृह, प्रत्येक दिन, प्रेम से अर्पित पूजा के सरलतम कर्मों के द्वारा सुलभ करते हुए समाप्त होता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपने ही घर में एक छोटा पूजा-कर्म कीजिए — एक दीप जलाइए, भगवान् के चित्र के सम्मुख एक पुष्प या थोड़ा भोग अर्पित कीजिए, और स्तुति तथा कृतज्ञता के कुछ शब्द कहिए। आरम्भ, जैसे व्रत करता है, यह स्मरण करके कीजिए कि भगवान् को आपसे कुछ नहीं चाहिए; आपका अर्पण प्रार्थना नहीं, अपितु शुद्ध प्रेम हो। यदि आप परिवार के साथ रहते हैं, तो किसी एक को उसका एक क्षण भी साझा करने के लिए आमन्त्रित कीजिए, यह स्मरण करते हुए कि साझा की गई भक्ति उन सबको आशीर्वाद देती है जो उसमें भाग लेते हैं। फिर उस बिना-सौदे के प्रेम के भाव को अपने शेष दिन में साथ ले चलिए।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का उन्नीसवाँ अध्याय इस ग्रन्थ को व्यावहारिक भक्ति के उपहार से समाप्त करता है। भगवान् विष्णु तथा देवी लक्ष्मी को समर्पित पुंसवन व्रत गृहस्थ के लिए पग-पग प्रस्तुत किया गया है — इसकी नित्य पूजा, पति-पत्नी द्वारा इसका साझा आचरण, और इसे निभाने वाले सभी के लिए इसके प्रचुर फल। इसके हृदय में सबसे सुन्दर सत्य निहित है: कि भगवान्, पूर्ण और आत्म-तृप्त, उनके अभाव के कारण नहीं, अपितु हमारे कारण पूजे जाते हैं, और उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक अर्पित प्रेम एक गृह पर प्रत्येक कल्याण उतार लाता है। इस प्रकार षष्ठ स्कन्ध, जो पाप और शोक, युद्ध और विलाप से होकर यात्रा करता रहा, एक साधारण हृदय की शान्त पूजा में विश्राम पाता है, हमें स्मरण कराते हुए कि परम विद्या अन्ततः सरल, नित्य भक्ति में ही बसती है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, एकोनविंश प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-19-the-pumsavana-vow-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

